वानिकी समाचार
(अर्द्धवार्षिक)

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्, देहरादून

वर्ष–1 जुलाई–दिसम्बर 2009 अंक–2

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् सोसायटी की 18वीं वार्षिक सामान्य बैठक

माननीय श्री जयराम रमेश,पर्यावरण एवं वन मंत्री, भारत सरकार की अध्यक्षता में भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् (भा.वा.अ.शि.प.) सोसायटी की 18वीं वार्षिक सामान्य बैठक दिनांक 22 दिसम्बर 2009 को पर्यावरण भवन, नई दिल्ली में सम्पन्न हुई। इस बैठक के दौरान भा.वा.अ.शि.प. का वार्षिक प्रतिवेदन और परीक्षित वार्षिक लेखा 2008–2009 पारित किए गए। अन्य मुद्दे जैसे भा.वा.अ.शि.प. सोसायटी की दिनांक 25 नवम्बर 2008 को सम्पन्न हुई 17वीं वार्षिक सामान्य बैठक के कार्यवृत्त की पुष्टि इत्यादि कार्यसूची मद में सम्मिलित थे।

शासक मण्डल की 41वीं बैठक

श्री विजय शर्मा, अध्यक्ष, भा.वा.अ.शि.प. शासक मण्डल एवं सचिव, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय की अध्यक्षता में शासक मण्डल की 41वीं बैठक दिनांक 9 नवम्बर 2009 को पर्यावरण भवन, नई दिल्ली में सम्पन्न हुई। श्री शर्मा ने मण्डल के सभी माननीय सदस्यों का स्वागत किया और इच्छा प्रकट की कि भा.वा.अ.शि.प. को भविष्यदर्शी गुणवत्ता संपन्न अनुसंधान करते हुए वानिकी अनुसंधान के क्षेत्र में प्रतिमान बनना चाहिए। उन्होंने सभी सदस्यों से आग्रह किया कि वे वानिकी अनुसंधान की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए परिषद का मार्गदर्शन करें। महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. ने अपने स्वागत संदेश में अध्यक्ष महोदय के नेतृत्व के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त की जिसके द्वारा माननीय वित्त मंत्री, भारत सरकार के दिनांक 6 जुलाई 2009 को दिए गए बजटीय भाषण में अनुसंधान, शिक्षा और विस्तार के क्षेत्र में उत्कृष्टता के लिए भा.वा.अ.शि.प. के नाम का उल्लेख हुआ तथा एक बार के अतिरिक्त अनुदान रू. 100 करोड़ का अधिनिर्णय दिया गया। बैठक के दौरान अन्य मुद्दे जैसे 40वीं शासक मण्डल की बैठक दिनांक 20 अप्रैल 2009 के कार्यवृत्त की पुष्टि के साथ–साथ भा.वा.अ.शि.प. के वार्षिक प्रतिवेदन और परीक्षित वार्षिक लेखा 2008–09 को अनुमोदित किया गया।

संकोश बहुउद्देशीय जल विद्युत परियोजना स्थल का निरीक्षण

डॉ. जी.एस. रावत, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. के नेतृत्व में परिषद् की एक उच्च स्तरीय संचालन समिति द्वारा भूटान स्थित व टिहरी जल–बाँध विकास निगम, ऋषिकेश द्वारा प्रायोजित 'संकोश बहुउद्देशीय जल विद्युत परियोजना' स्थल के निरीक्षण एवं शासकीय प्रबंधन हेतु दिनांक 08 से 11 सितम्बर 2009 तक भूटान की यात्रा की गई। उक्त समिति में परिषद् के डॉ. जी. एस. रावत, महानिदेशक, श्री एम.एस. गर्ब्याल, उप महानिदेशक (प्रशासन), डॉ. रवीन्द्र कुमार, उप महानिदेशक (विस्तार), डॉ. धर्मेन्द्र वर्मा, सहायक महानिदेशक, पर्यावरणीय प्रभाव आकलन प्रभाग (प.प्र.आ.प्र) एवं श्री सुधीर कुमार, वैज्ञानिक–ई, प. प्र. आ. प्र शामिल थे। इस यात्रा का मुख्य उद्देश्य भूटान के उच्च अधिकारियों से सम्पर्क कर

(बाँए से) डॉ. धर्मेन्द्र वर्मा, सहायक महानिदेशक, प. प्र. आ. प्र ; श्री एम.एस. गर्ब्याल, उप महानिदेशक (प्रशासन) डॉ. जी.एस. रावत, महानिदेशक तथा डॉ. रवीन्द्र कुमार, उप महानिदेशक (विस्तार), भा.वा.अ.शि.प. भूटान में

संकोश बहुउद्देशीय जल विद्युत परियोजना...

परिषद् द्वारा की जा रही परियोजना के पर्यावरणीय अध्ययन में आने वाली कठिनाईयों का निराकरण करना था।

महामहिम राजदूत श्री पवन वर्मा महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. से स्मृति चिह्न प्राप्त करते हुए

उच्च–स्तरीय समिति द्वारा थिम्पू, भूटान में भारतीय राजदूत महामहिम श्री पवन वर्मा से भेंट कर यात्रा के उद्देश्य की जानकारी दी गई एवं महामहिम को परियोजना के पर्यावरणीय अध्ययन के प्रारम्भिक अनुमानों से अवगत कराया गया। महामहिम राजदूत द्वारा परियोजना की महत्ता रेखांकित करते हुए परिषद् को समय सीमा में अध्ययन कार्य पूर्ण करने बाबत निर्देशित किया गया। समिति द्वारा भूटान सरकार के कृषि सचिव एवं ऊर्जा सचिव से राजधानी थिम्पू में भेंट कर परियोजना के संबंध में सूचनाओं का आदान–प्रदान किया गया तथा परिषद् की अन्य विविध गतिविधियों से भी अवगत कराया गया। भूटान के उच्च अधिकारियों द्वारा परिषद् की उच्च स्तरीय समिति को परियोजना के पर्यावरणीय अध्ययन हेतु आवश्यक पूर्ण सहयोग समय पर प्रदान करने का आश्वासन दिया गया। समिति द्वारा भूटान में ही स्थित व टिहरी जल– बाँध विकास निगम, ऋषिकेश द्वारा प्रायोजित 'भुनाका' नाम की एक दूसरी जल– विद्युत परियोजना स्थल

महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. व भूटान के कृषि सचिव श्री शेरूब ग्याल्टसेन थिम्पू में भेंटवार्ता के दौरान

का भी निरीक्षण किया गया, जिसका पर्यावरणीय अध्ययन भी परिषद् द्वारा किया जा रहा है। उच्च स्तरीय समिति ने भूटान स्थित दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (सार्क) के वानिकी मुख्यालय में जाकर निदेशक से भेंट की तथा सार्क वानिकी निदेशालय द्वारा क्रियान्वित की जा रही गतिविधियों की जानकारी भी प्राप्त की। सार्क वानिकी निदेशालय को वानिकी संबंधित अनुसंधान कार्य में आवश्यक सहयोग एवं मार्गदर्शन प्रदान करने का भी परिषद् द्वारा आश्वासन दिया गया।

संकोश परियोजना की संचालन समिति के सदस्य गण दक्षेस के वानिकी निदेशालय के अधिकारियों के साथ

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद की अनुसंधान गतिविधियों पर विचार मंथन सत्र

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् की अनुसंधान गतिविधियों पर विचार मंथन सत्र (Brainstorming Session) का संचालन, काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, बंगलौर में दिनांक 9 दिसम्बर 2009 को भारत सरकार, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय के डॉ. पी. जे. दिलीपकुमार, महानिदेशक (वन) तथा विशेष सचिव की अध्यक्षता में किया गया। भारत सरकार, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय के डॉ. पी. बी. गंगोपाध्याय, अतिरिक्त महानिदेशक भी सत्र में उपस्थित थे। भा.वा.अ.शि.प. से डॉ. जी. एस. रावत, महानिदेशक, समस्त उपमहानिदेशक, निदेशक (अनुसंधान), समस्त भा.वा.अ.शि.प. संस्थानों के निदेशकों और संस्थानों के कुछ नामित वैज्ञानिकों ने सत्र में हिस्सा लिया। सत्र का उद्देश्य भा.वा.अ.शि.प. के संस्थानों को सभी प्रकार से विश्व स्तरीय अनुसंधान संगठन बनाने में होने वाली कमियों की पहचान करना था। इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए कार्य योजनाओं यथा मुख्य विषय की पहचान/विशेषज्ञता का क्षेत्र/प्राथमिकता, वैज्ञानिकों एवं कर्मियों की सेवा शर्तों, कार्य के वातावरण में सुधार, रिक्त पदों का भरना इत्यादि की व्युत्पत्ति की गई।

काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान ,बंगलौर में भा.वा.अ.शि.प. की अनुसंधान गतिविधियों पर विचार मंथन सत्र

अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशालाओं/बैठकों में परिषद् की भागीदारी

डॉ. जी. एस. रावत, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प.; डॉ. एस. एस. नेगी, निदेशक, वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून, डॉ. एच. एस. गिन्वाल, प्रमुख जी. एवं टी.पी. प्रभाग तथा वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान, कोयम्बटूर, की डॉ. मधुमिता दास गुप्ता, वैज्ञानिक–डी, दिनांक 5 से 8 अक्टूबर 2009 तक मलेशिया में "वन आनुवंशिकी संसाधन संरक्षण" की अन्तर्राष्ट्रीय परिचर्चा में सम्मिलित हुए।

डॉ. जी.एस. रावत, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. दिनांक 4 अक्टूबर 2009 को मलेशिया में APARI की पांचवीं सभा में सम्मिलित हुए।

डॉ. जी. एस. रावत, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प., मलेशिया में दिनांक 9 अक्टूबर 2009 को FAO SOW FGT बैठक में सम्मिलित हुए।

डॉ. जी. एस. रावत, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प., भूटान में दिनांक 12 और 13 अक्टूबर 2009 को दक्षेस (सार्क) वानिकी केन्द्र के शासक मंडल की तृतीय बैठक में सम्मिलित हुए।

श्री संदीप त्रिपाठी, निदेशक (अनुसंधान), भा.वा.अ.शि.प., दिनांक 27 से 30 अक्टूबर 2009 तक जापान में ''8वीं एशिया फलक्स कार्यशाला 2009'' में सम्मिलित हुए।

श्री. वी. आर. एस रावत, वैज्ञानिक–'डी', जैवविविधता एवं जलवायु परिवर्तन प्रभाग, भा.वा.अ.शि.प. ने दिनांक 10 से 14 अगस्त 2009 को बॉन जर्मनी में तथा दिनांक 2 से 6 नवम्बर 2009 तक बार्सीलोना में जलवायु परिवर्तन वार्ता पर भारत सरकार के प्रतिनिधि मंडल के सदस्य के रूप में बैठक में सहभागिता की। उन्होंने जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र रूपरेखा प्रसभा (यूएनएफसीसीसी) के दलों के 15वें सम्मेलन/क्योटो प्रोटोकॉल के दलों की पांचवीं बैठक, कोपेनहेगन, डेनमार्क में दिनांक 7 से 18 दिसम्बर 2009 तक सहभागिता भी की।

वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान, कोयम्बटूर की डॉ. मधुमिता दासगुप्ता, वैज्ञानिक–डी, तथा वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून के डॉ. अशोक कुमार, वैज्ञानिक –डी, डॉ. अजय ठाकुर, वैज्ञानिक–सी, तथा डॉ. प्रवीन, वैज्ञानिक–बी, अर्जेन्टिना में दिनांक 18 से 23 अक्टूबर 2009 तक 13वीं विश्व वन कांग्रेस में सम्मिलित हुए।

वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान, कोयम्बटूर के डॉ. कृष्णकुमार, निदेशक, डॉ. निकोडेमस, वैज्ञानिक–डी, तथा डॉ. वी. शिवकुमार, वैज्ञानिक–डी, आस्ट्रेलिया तथा थाइलैण्ड में दिनांक 20 से 30 नवम्बर 2009 तक उन्नत बीज तथा पौध के उत्पादन के प्रसार हेतु उच्चस्तरीय बैठक में सम्मिलित हुए।

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला के निदेशक श्री मोहिन्द्र पाल ने इज़राईल में दिनांक 22 जून से 10 जुलाई 2009 तक आयोजित पाठयक्रम ''शीतमरूस्थल क्षेत्र अधिदेश के अन्तर्गत'' में सम्मिलित हुए।

वन अनुसंधान संस्थान देहरादून के डॉ. एस.एस. नेगी, निदेशक, श्री ए. एस. रावत समूह समन्वयक (अनुसंधान), डॉ. एन. एस. के. हर्ष, वैज्ञानिक–एफ तथा डॉ. सुभाष नौटियाल, वैज्ञानिक–एफ ने कम्बोडिया में दिनांक 9 से 12 दिसम्बर 2009 तक ''चयनित वृक्षों पर परिरक्षण तथा उपचार कार्यों के प्रदर्शन'' तथा ''अंगकोर के संरक्षण के लिए अंतर्राष्ट्रीय समन्वय समिति'' के 16वें पूर्ण सत्र में हिस्सा लिया।

डॉ. एन. के. बोरा अनुसंधान अधिकारी शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर दिनांक 2 से 9 दिसम्बर 2009 तक डेनमार्क में ''कोपेनहेगन जलवायु एक्सचेंज 2009'' में सम्मिलित हुए।

चतुर्थ राष्ट्रीय वानिकी सम्मेलन 2009

चतुर्थ राष्ट्रीय वानिकी सम्मेलन का आयोजन दिनांक 9 से 11 नवम्बर 2009 की अवधि में देहरादून में किया गया। इस सम्मेलन का उद्घाटन श्री हरबंस कपूर (विधान सभा अध्यक्ष, उत्तराखण्ड) के द्वारा किया गया। हिमाचल प्रदेश प्रधान मुख्य वन संरक्षक, श्री विनय टंडन, भा.व.से. तथा उत्तराखण्ड प्रधान मुख्य वन संरक्षक डॉ आर.बी.एस. रावत, भा.व.से., उद्घाटन समारोह में सम्मानीय अतिथि थे। विशिष्ट विषयवस्तुओं जैसे, वानिकी तथा जैवविविधता, चिरस्थाई वन प्रबंधन, वन रक्षण, वन तथा पर्यावरण, एवं शिक्षा, विस्तार तथा विकास आदि विषयों पर पांच तकनीकी सत्र वन अनुसंधान संस्थान के विभिन्न कार्यक्रम स्थलों पर एक साथ आयोजित किये गये।

सम्मेलन में विविध अनुसंधान संस्थानों जैसे, वन्य जीव संस्थान, भारतीय वन सर्वेक्षण, NRSA, केन्द्रीय रेशम बोर्ड, घास एवं चारा अनुसंधान संस्थान, रक्षा मंत्रालय, आयूष (AYUSH)–स्वास्थ्य तथा परिवार कल्याण मंत्रालय, भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् संस्थान, इत्यादि के अनुसंधानकर्ताओं तथा वैज्ञानिकों, राज्य वन विभाग, अनुसंधान संस्थान तथा राष्ट्रीय इंदिरा गांधी वन अकादमी के वन अधिकारियों तथा वन आधारित उद्योग जैसे, तमिलनाडु न्यूज प्रिन्ट तथा पेपर लिमिटेड, आई टी सी, भद्राचलम तथा स्टार पेपर मिल के प्रतिनिधियों तथा शैक्षिक संस्थानों के विद्यार्थियों इत्यादि 250 प्रतिनिधियों ने सम्मेलन में सक्रिय रूप से भाग लिया।

अनुसंधान सलाहकार समूह (RAG) की बैठक

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद की अनुसंधान सलाहकार समूहों की बैठकों का संचालन नवम्बर तथा दिसम्बर 2009 की अवधि में मुख्य क्षेत्रों की पहचान पर आधारित भावी अनुसंधान क्षेत्रों को निर्दिष्ट करने के लिए किया गया। अनुसंधान सलाहकार समूहों की बैठकों का आयोजन वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान, कोयम्बटूर में 16 और 17 नवम्बर; वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून में 17 से 19 नवम्बर; हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला में 23 और 24 नवम्बर; वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट में 26 और 27 नवम्बर; काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, बंगलौर में 7 और 8 दिसम्बर; वन उत्पादकता संस्थान, रांची में 7 और 8 दिसम्बर तथा शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर में 21 और 22 दिसम्बर 2009 को किया गया। बैठकों में विविध जैव भौगोलिक क्षेत्रों की आवश्यकताओं को पूर्ण करने के उद्देश्य से संस्थानों के वैज्ञानिकों द्वारा परियोजनाओं की बड़ी संख्या में प्रस्तुति की गई तथा अनुसंधान सलाहकार समूह के सदस्यों के समक्ष विचार–विमर्श किया गया।

चौथी निदेशक बैठक

डॉ. गोविन्द सिंह रावत, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. की अध्यक्षता में दिनांक 25 सितम्बर 2009 को भा.वा.अ.शि.प. मुख्यालय में चौथी निदेशक बैठक का आयोजन हुआ। सभी संस्थानों के निदेशकों एवं परिषद् मुख्यालय के निदेशालयों ने विभिन्न प्रशासकीय और वित्तीय और मानव संसाधनों के मुद्दों पर चर्चा की। तीसरी निदेशक बैठक की कार्रवाई रिपोर्ट का भी पुनरीक्षण किया गया।

जारी अनुसंधान परियोजनाओं का वार्षिक पुनरीक्षण

वर्ष 2009–2010 के दौरान 395 जारी अनुसंधान परियोजनाओं का पुनरीक्षण एवं मूल्यांकन किया गया। इनमें से 283 परियोजनाएं परिषद् द्वारा वित्तपोषित तथा 112 परियोजनाएं बाहरी संस्थानों द्वारा सहायता प्राप्त थीं। सभी संस्थानों की अनुसंधान परियोजनाओं का मूल्यांकन अक्टूबर 2009 तक पूरा कर लिया गया तथा परिषद् के सभी संस्थानों के निदेशकों को वार्षिक पुनरीक्षण रिपोर्ट कार्रवाई हेतु दिसम्बर 2009 तक प्रेषित कर दी गई है। 22 अनुसंधान परियोजनाओं का पुनरीक्षण स्वतंत्र विशेषज्ञों / एजेन्सी द्वारा भी करवाया गया।

स्लेम अभ्यासों का उन्नयन

विश्व बैंक मिशन ने भारत में धारणीय भूमि तथा पारिस्थितिकी प्रबंधन को मुख्य धारा में लाने एवं उन्नयन हेतु नीति तथा संस्थागत सुधार के लिए दिनांक 7 से 11 दिसम्बर 2009 को मध्य–आकार की भूमण्डलीय पर्यावरणीय सुविधा (GEF) परियोजना (MSP) को आरम्भ किया। भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद अगले तीन वर्षों में देश में स्लेम अभ्यासों को मुख्य धारा में लाने एवं बढ़ाने के उद्देश्य से छः अन्य भूमण्डलीय पर्यावरणीय सुविधा (GEF) वित्तपोषित परियोजना के साथ समन्वय करेंगे।

सुश्री युका मेकिनो विश्व बैंक दल नेत्री तथा मिशन के अन्य सदस्य डॉ. रवीन्द्र कुमार, उप महानिदेशक (विस्तार) तथा स्लेम परियोजना दल के साथ चर्चा करते हुए

भारत में वृक्षजात तिलहन के अंतर्गत क्षेत्र का प्राक्कलन

वृक्षजात तिलहन राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए लक्षित है। जैट्रोफा जैसी प्रजातियों के बीजों से मिलने वाला तेल वैकल्पिक ईंधन निर्मित करने के लिए महत्वपूर्ण है और इससे जीवाश्म ईंधनों के ऊपर पूर्ण निर्भरता कम करने के लिए सहयोग अपेक्षित है। इसी प्रकार करंज, तुंग, पाइन, ऑलिव के बीजों से निकलने वाला तेल बहुत से अन्तः उपयोगों के लिए महत्वपूर्ण है। इस प्रकार के तेलों से संबंधित मुद्दों को संभालने के लिए राष्ट्रीय तिलहन एवं वनस्पति तेल विकास बोर्ड (NOVOD) का कृषि मंत्रालय के अंतर्गत गठन किया गया है। इसके (NOVOD) द्वारा वित्तपोषित एक परियोजना, भारत में वृक्षजात तिलहनों के आँकड़ा कोष (डाटाबेस) का विकास सांख्यिकी प्रभाग द्वारा सभी भा.वा.अ.शि.प संस्थानों के सहयोग से संचालित की जा रही है।

डॉ. जी. एस. रावत, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. का वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान, कोयम्बटूर तथा काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, बंगलौर का दौरा

डॉ. जी.एस. रावत, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. वन विज्ञान केन्द्र पौधशाला का उद्‌घाटन करते हुए

डॉ. जी. एस. रावत, महानिदेशक, भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् ने वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान, कोयम्बटूर का 8 दिसम्बर 2009 को दौरा किया। दौरे के दौरान उन्होंने संस्थान के आदर्श गाँव काँडीयूर में आदर्श पौधशाला का उद्‌घाटन किया। इस अवसर पर उन्होंने आदर्श गाँव की पौधशाला की स्थापना एवं प्रबंधन का कार्य देख रहे स्वयंसहायता समूह से वार्तालाप किया। उन्होंने तमिलनाडु वन विभाग के सहयोग से निर्मित वन विज्ञान केन्द्र की आदर्श पौधशाला का भी उद्‌घाटन किया। इस अवसर पर उन्होंने कोयम्बटूर जिले के किसानों से विचार विमर्श किया और उत्कृष्ट पौध वितरित की। महानिदेशक, महोदय ने एक पुस्तक एवं अनेक ब्रॉशरों का भी विमोचन किया। उन्होंने संस्थान में वृक्ष सूचना केन्द्र और ऑटोमेटेड ओपन टॉप चैम्बर (AOTC) का भी भ्रमण किया।

महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. द्वारा उत्कृष्ट पौध सामग्री वितरित की गई

डॉ. जी. एस. रावत, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. 10 दिसम्बर 2009 को काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, बंगलौर में पहुँचे जहाँ उन्होंने इण्डियन वुड इन्सेक्ट डाटाबेस (IWID) का शुभारम्भ किया।

भा.वा.अ.शि.प.–आई.टी.टी.ओ. परियोजना का समापन

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् द्वारा संचालित अंतर्राष्ट्रीय उष्णकटिबंधीय प्रकाष्ठ संगठन (ITTO) द्वारा वित्तपोषित ''भारत में उष्णकटिबंधीय प्रकाष्ठ और अन्य वानिकी मापदण्डों से संबंधित सांख्यिकी के संकलन, प्रक्रमण और प्रसार के लिए एक संजाल की स्थापना'' नामक परियोजना का दिनांक 31 जुलाई 2009 को समापन हुआ। परियोजना जो कि एक वानिकी क्षेत्र में एक विस्तृत राष्ट्रीय आँकड़ा बैंक हेतु आँकड़ा स्रोतों के संजाल हेतु प्रारम्भ

की गई थी अपने उद्देश्यों को पूर्णतः पूरा करने में सफल रही, साथ ही इसने विभिन्न पणधारियों की सूचना आवश्यकताओं का गहराई से आकलन भी किया।

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् द्वारा राष्ट्रीय बांस मिशन के अन्तर्गत बांस तकनीकी समर्थन समूह (बी.टी.एस.जी.) के द्वारा किसानों तथा क्षेत्र कर्मचारियों के लिए दिसम्बर 2009 तक अनेक "पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम" का आयोजन, हिमाचल प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान तथा गुजरात में किया गया। राष्ट्रीय बांस मिशन के प्रचार अभियान के अन्तर्गत हिन्दी इश्तहार, "बांस आजीविका का एक साधन" निःशुल्क वितरण हेतु पुनर्मुद्रित किया गया।

सूचना प्रौद्योगिकी गतिविधियाँ

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्, देहरादून ने वाईड एरिया नेटवर्क (WAN) स्थापित कर अपने अधीनस्थ सभी संस्थानों, जो देश के अलग–अलग भौगोलिक क्षेत्रों में हैं, को जोड़ने के लिए बी.एस.एन.एल. की मदद से एक एम.पी.एल.एस.–वी.पी.एन. स्थापित करा कर इस क्षेत्र में एक अग्रणी स्थान प्राप्त कर लिया है। यह एक केंद्रीकृत प्रणाली है जिसका परिचालन केंद्र देहरादून में अवस्थित है और मार्च 2008 से क्रियाशील है।

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्, देहरादून द्वारा मई 2008 में स्थापित वीडियो कान्फ्रेंसिंग सुविधा वर्तमान में ई–गर्वनेंस गतिविधियों के लिए एक वरदान सिद्ध हो रही है। यह सुविधा भा.वा.अ.शि.प. द्वारा संचालित सभी संस्थानों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को संस्थानों की भौगोलिक दूरियों को हटाकर अनुसंधान एवं प्रशासनिक कार्यों और प्रशिक्षण में सक्रिय रूप से सहभागिता प्रदान कर रही है। परिषद् ने भारतीय वानिकी अनुसंधान सूचना प्रणाली (IFRIS) को स्थापित करने एवं उसे सुचारू रूप से चलाने के लिए परिषद् ने एक आँकड़ा केंद्र (डाटा सेंटर) स्थापित कर लिया है। इसमें उच्चकोटि के हार्डवेयर एवं सॉफ्टवेयर का समन्वय है और यह परिषद् की समस्त सूचनाप्रौद्योगिक की आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम है। यह केंद्र भारत सरकार के विभिन्न कार्यालयों व मंत्रालयों के बीच एक अनूठा केंद्र है जिससे सूचना प्रणाली तंत्र को द्रुतगति से तथा विभिन्न स्थानों पर कार्यान्वित करने की अद्भुत क्षमता है। इसकी उत्कृष्ट निर्माणशैली के फलस्वरूप परिषद् ने इस के लिए आई.एस.ओ. 27001–2005 मानक प्राप्त करने की प्रक्रिया भी प्रारंभ कर दी है।

कॉर्बन स्ववियोजन प्रशिक्षण

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् के जैवविविधता एवं जलवायु परिवर्तन प्रभाग द्वारा दिनांक 5 से 9 अक्टूबर 2009 को अधिकारियों तथा वैज्ञानिकों के लिए "कॉर्बन स्ववियोजन" विषय पर पांच दिवसीय प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का संचालन किया गया। उक्त पाठ्यक्रम में विभिन्न संस्थानों के वैज्ञानिकों तथा अधिकारियों ने हिस्सा लिया। इस कार्यक्रम को उच्चस्तरीय मानते हुए सहभागियों द्वारा सराहना की गई।

कॉर्बन स्ववियोजन प्रशिक्षण के आयोजक एवं सहभागी।

मध्य कैरियर प्रशिक्षण परियोजना

भारतीय वन सेवा अधिकारियों के प्रशिक्षण के लिए पर्यावरण एवं वन मंत्रालय की मध्य कैरियर प्रशिक्षण परियोजना अत्यन्त प्रतिस्पर्धी प्रक्रिया के बाद भा.वा.अ.शि.प. को प्राप्त हुई। तीन वर्षों की इस परियोजना की लागत रू. 5.89 करोड़ है। अधिकारियों को श्रेष्ठतम प्रशिक्षण प्रदान कराने के लिए भा.वा.अ.शि.प. ने भारतीय वन्य जीव संस्थान, देहरादून; भारतीय वन सर्वेक्षण, देहरादून; भारतीय प्रबन्धन संस्थान, अहमदाबाद; कृषि सर्वेक्षण एवं स्वीडिस विश्वविद्यालय, स्वीडन तथा कोलाराडो राज्य विश्वविद्यालय, संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के साथ साझेदारी की। इसी अभिप्राय से भा.वा.अ.शि.प. ने इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय वन अकादमी के साथ दिनांक 3 दिसम्बर 2009 को एक अनुबन्ध पत्र पर हस्ताक्षर किये।

कार्यशाला/संगोष्ठी/बैठक

वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून एवं भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र, मुंबई द्वारा दिनाँक 4 और 5 नवम्बर 2009 को दो दिवसीय वैज्ञानिक संगोष्ठी "पर्वतीय क्षेत्रों में औद्योगिक विकास एवं पर्यावरण संरक्षण" पर आयोजित की गई। इस संगोष्ठी का शुभारम्भ उत्तराखण्ड राज्य के मुख्यमंत्री डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन 'बार्क' के वैज्ञानिक व हिन्दी विज्ञान परिषद् के सचिव डॉ. जयप्रकाश त्रिपाठी ने किया। प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार, भारत सरकार, डॉ. आर चिदमबरम ने कहा कि पहाड़ों के ग्रामीण क्षेत्रों में उद्योगों के विकास की बहुत आवश्यकता है। इस अवसर पर डॉ. जी. एस. रावत, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प., वन अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. एस.एस.नेगी, यूकॉस्ट के निदेशक डॉ. राजेन्द्र डोभाल, जैव चिकित्सा के निदेशक डॉ. कृष्णा वी. सैनिश, हैस्को संस्थापक डॉ. अनिल जोशी ने भी हिन्दी विज्ञान परिषद् के विज्ञान को आम जन की भाषा के रूप में प्रस्तुत करने के प्रयासों की सराहना की। कार्यशाला के तकनीकी सत्र में अपर निदेशक–उद्योग, सुधीर चन्द्र नौटियाल तथा सी.आई.आई के प्रतिनिधि राकेश ओबरॉय ने भी पर्वतीय क्षेत्रों में उद्योग की संभावनाओं पर विस्तृत प्रकाश डाला। समापन समारोह के दौरान वन अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. एस.एस.नेगी जी ने सहभागियों को स्मृति चिह्न भेंट किए।

वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून एवं भारतीय विश्वविद्यालय एसोसिएशन के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 22 से 24 सितम्बर, 2009 तक पर्यावरण शिक्षा–उच्च शिक्षा के समक्ष मुद्दे और चुनौतियां विषय पर नॉर्थजोन वाइस चांसलर्स कांफ्रेंस हुई, जिसका उद्घाटन उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी द्वारा किया गया। सम्मेलन को संबोधित करते हुए भा.वा.अ.शि.प. के महानिदेशक डॉ. जी.एस.रावत ने जलवायु परिवर्तन एवं ग्लोवल वार्मिंग का उल्लेख किया। इस अवसर पर इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय वन अकादमी के निदेशक श्री आर.डी जकाती, वन अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. एस. एस.नेगी, एसोसिएशन ऑफ इंडियन यूनिवर्सिटीज की सचिव डॉ. बीना साह व अपर सचिव सुश्री वीणा भल्ला तथा 30 विश्वविद्यालयों के कुलपति उपस्थित थे।

शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर एवं भारतीय वन प्रबंध संस्थान, भोपाल द्वारा दिनांक 29 अगस्त 2009 को शुष्क क्षेत्रों के अकाष्ठ वनोपज के मानकों एवं सूचकों के निर्धारण हेतु पर्यावरण एवं वन मंत्रालय द्वारा प्रायोजित एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। इस कार्यशाला के मुख्य

भा.वा.अ.शि.प.

अतिथि श्री ए. के. सिंह, प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं प्रबंध निदेशक, सी जी एम एफ पी फैडरेशन, रायपुर, छत्तीसगढ़ एवं विशिष्ट अतिथि, स्टीयरिंग कमेटी के अध्यक्ष तथा पूर्व प्रधान मुख्य वन संरक्षक, मध्य प्रदेश डॉ. रामप्रसाद थे।

शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर द्वारा दिनांक 16 नवम्बर 2009 को खेजड़ी (*Prosopis cineraria*) की मर्त्यता विषयक एक विचार मंथन संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी में डॉ. ए. एस. फरोदा, पूर्व कुलपति, महाराणा प्रताप कृषि एवं तकनीकी विश्वविद्यालय, उदयपुर ने अध्यक्षता की। संगोष्ठी में खेजड़ी की महत्ता विषयक शोध एवं इस समस्या के समाधान हेतु एक समन्वित परियोजना बनाने हेतु प्रस्ताव पारित किया गया।

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने शीत मरूस्थल की कुछ महत्वपूर्ण प्रजातियों की ''पारिस्थितिक एवं सामजिक–आर्थिक महत्ता'' पर संस्थान के क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र ताबो (हि.प्र.) द्वारा वन विभाग के कर्मचारियों को प्रशिक्षित करने के लिए दिनांक 25 सितम्बर 2009 को एक दिवसीय कार्यशाला एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारम्भ ताबो बौद्धमठ के प्रमुख माननीय श्री गीयासिंह सोनम अंगडोई ने किया व हिमाचल प्रदेश सरकार के अनुसूचित जन–जातीय विकास के भूतपूर्व मन्त्री, श्री पून्योंगराय इस अवसर पर मुख्य अतिथि थे।

वन उत्पादकता संस्थान,रांची के निदेशक श्री रविन्द्र कृष्णमूर्ति एवं वन संरक्षक श्री रामेश्वर दास ने राज्य स्तरीय निगरानी समिति की बैठक में दिनांक 13 जुलाई 2009 को भाग लिया जिसमें भारत सरकार यू.एन.डी.पी. देश सहयोग रूपरेखा – ।। के अधीन परियोजना ''जैव विविधता संरक्षण के प्राकृतिक संसाधन प्रबन्धन वित्त पोषित समुदाय के माध्यम से'' झारखण्ड राज्य में काम की प्रगति की समीक्षा की गई। संस्थान द्वारा दिनांक 08 सितम्बर 2009 को ''केंचुआ खाद'' विषय पर एक कार्यशाला वन अनुसंधान केन्द्र, माण्डर, रांची में आयोजित की गई।

प्रशिक्षण / प्रदर्शन

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा नालागढ़ वनमण्डल के फील्ड कर्मचारियों तथा शिवालिक पहाड़ियों के प्रगतिशील किसानों के लिए दिनांक 17 सितम्बर 2009 को ''वृक्ष सुधार कार्यक्रम द्वारा वन उत्पादकता में वृद्धि'' पर अनुसंधान संस्थान द्वारा बिड़पलासी, नालागढ़ में प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें लगभग 50 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

''वृक्ष सुधार कार्यक्रम द्वारा वन उत्पादकता में वृद्धि'' प्रशिक्षण कार्यक्रम के सहभागी

वन अनुसंधान संस्थान देहरादून द्वारा वानिकी एवं जड़ी बूटी पौधों की रोपण तकनीक पर पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम दिनांक 20 से 24 जुलाई 2009 तक आदर्श ग्राम श्यामपुर, अम्बीवाला, देहरादून में संपन्न हुआ। इसमें किसानों को औषधीय पौधे जैसे–एलो वेरा, स्टीविया, अकरकरा, अश्वगंधा इत्यादि के पौधे वितरित किए।

वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून में 26 से 30 अक्टूबर 2009 तक बाँस प्रवर्धन खेती एवं संवर्धन विषय पर पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में राजस्थान के उद्यान एवं कृषि विभाग के अधिकारियों ने भाग लिया। प्रशिक्षण कार्यक्रम द्वारा वन संवर्धन प्रभाग ने बाँस की विशेषता, रखरखाव, एवं इसकी खेती आदि संबंधित महत्वपूर्ण एवं उपयोगी जानकारी दी।

वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट, द्वारा दिनांक 14 से 16 सितंबर तक भूमि संसाधन सर्वेक्षण के लिए जी.पी.एस प्रौद्योगिकी के प्रयोग पर प्रशिक्षण चलाया गया। नागालैन्ड वन विभाग के 12 सदस्यों और कई गैर शासकीय संगठनों ने इस प्रशिक्षण में भाग लिया। संस्थान द्वारा त्रिपुरा राज्य वन विभाग के वन अधिकारियों एवं वन रक्षकों के एक दल को दिनांक 11 अक्टूबर 2009 को प्रशिक्षण दिया गया। संस्थान ने मोन जिला, नागालैंड के वन अधिकारियों को 29 और 30 अक्टूबर 2009 को बांस के ऊपर प्रशिक्षण प्रदान किया।

शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर द्वारा दिनांक 14 से 18 दिसम्बर 2009 के दौरान पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित ''नाजुक मरूस्थलीय पारिस्थितिकी तंत्र के सतत्पोषणीय विकास पर समन्वित आग्रह'' विषय पर एक सप्ताह का भारतीय वन सेवा के अधिकारियों का अनिवार्य प्रशिक्षण आयोजित हुआ। जिसमें भारतीय वन सेवा के 31 अधिकारी सम्मलित हुए।

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर द्वारा कृषिवानिकी पर ICFRE-BAIF प्रायोजित प्रशिक्षण 27 से 30 अक्टूबर, 2009 तक महाराष्ट्र के यवतमाल एवं चन्द्रपुर जिलों के किसानों के लिये एवं दिनांक 9 से 13 नवम्बर 2009 को हुबली (कर्नाटक) के किसानों के लिये आयोजित किया गया। संस्थान द्वारा महाराष्ट्र वन विकास निगम के कर्मियों हेतु दिनांक 16 से 18 नवम्बर 2009 को तीन दिवसीय प्रशिक्षण ''जैव उर्वरकों का रोपणी एवं रोपण में प्रयोग एवं सागौन, सिवान, यूकेलिप्टस, शीशम आदि के क्लोनल प्रजनन'' विषय पर आयोजित किया गया।

राजभाषा

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर द्वारा राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय भारत सरकार की हिन्दी में कार्य करने हेतु लागू प्रोत्साहन योजना के अन्तर्गत वर्ष 2008–2009 के दौरान हिन्दी में किये गये कार्य हेतु 10 कर्मचारियों को प्रोत्साहन स्वरूप नगद राशि के पुरस्कार दिये गये। संस्थान द्वारा दिनांक 18 दिसम्बर 2009 को ''एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला'' का आयोजन किया गया जिसमें संस्थान के 20 कर्मचारियों ने भाग लिया।

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा दिनांक 25 अगस्त 2009 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, शिमला की ओर से एक ''प्रश्न मंच'' प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें शिमला स्थित केन्द्र सरकार के विभिन्न विभागों, निगमों, बैंकों व संस्थान के अधिकारियों व कर्मचारियों ने भाग लिया। हिमालय वन अनुसंधान संस्थान, शिमला के श्री जोगिन्द्र चौहान और श्री ज्वाला प्रसाद ने प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर द्वारा दिनांक 25 सितम्बर, 2009 को राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन में आ रही कठिनाइयों के निवारण तथा आपसी विचार विमर्श से कार्यालयीन काम–काज में हिन्दी को गति प्रदान करने के आशय से हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। संस्थान

द्वारा दिनांक 23 दिसम्बर, 2009 को टंकण कार्यों से जुड़े कर्मचारियों की कम्प्यूटर पर हिन्दी में टंकण के दौरान आने वाले कठिनाइयों के समाधान के आशय से हिन्दी कार्यशाला भी आयोजित हुई।

हिन्दी समारोह

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्, देहरादून द्वारा दिनांक 14 से 18 सितम्बर 2009 तक हिन्दी सप्ताह समारोह का परिषद् के सभागार में आयोजन किया गया। समारोह का उद्घाटन परिषद् के महानिदेशक डॉ. जी.एस. रावत द्वारा किया गया। इस अवसर पर महानिदेशक महोदय ने अपने विचार व्यक्त करते हुए सभी अधिकारियों तथा कर्मचारियों को राजभाषा हिन्दी को बढ़ावा देने और अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में करने को प्रोत्साहित किया। हिन्दी सप्ताह के दौरान निबंध प्रतियोगिता जिसका विषय था ''वनों का विनाश एवं जलवायु परिवर्तन'', टिप्पण प्रतियोगिता और 'स्वरचित काव्यपाठ' का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले कर्मचारियों को महानिदेशक महोदय द्वारा पुरस्कार से सम्मानित किया गया। पुरस्कार वितरण के साथ ही समारोह का समापन हुआ।

परिषद् में आयोजित स्वरचित काव्यपाठ का रसास्वादन करते परिषद् कर्मी, इन्सेट में डॉ. जी.एस. रावत, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. इस अवसर पर हिन्दी के अधिकतम प्रयोग के लिए प्रोत्साहित करते हुए।

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर द्वारा दिनांक 01 से 14 सितम्बर 2009 के दौरान हिन्दी में कार्य करने का उत्साहित वातावरण तैयार करने के उद्देश्य से ''हिन्दी पखवाड़ा'' का आयोजन किया गया जिसमें हिन्दी प्रश्नोत्तरी, प्रशासनिक शब्दावली एवं टिप्पणी, प्रशासनिक हिन्दी भाषा ज्ञान, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली का हिन्दी ज्ञान, हिन्दी टंकण (कम्प्यूटर पर), हिन्दी भाषण, हिन्दी निबन्ध, हिन्दी आशुलिपि, हिन्दी में मौलिक तकनीकी लेख तथा हिन्दी कविता पाठ प्रतियोगिताएं आयोजित की गई।

शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर द्वारा दिनांक 14 से 29 सितम्बर 2009 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। दिनांक 14 सितम्बर 2009 को 'हिंदी दिवस' पर निदेशक डॉ. टी.एस. राठौड़ द्वारा सरकारी कामकाज हिंदी में करने को प्रोत्साहन देने हेतु ''अपील'' जारी की गई । पखवाड़ा के दौरान मंत्रालयिक एवं वैज्ञानिक/तकनीकी कर्मचारीगण हेतु हिंदी गतिविधियों के अंतर्गत आठ प्रतियोगिताएं सम्मिलित की गई। समापन समारोह आकाशवाणी, जोधपुर के कार्यक्रम अधिशासी डॉ. कालूराम परिहार के मुख्य आतिथ्येय में सम्पन्न हुआ।

वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट द्वारा दिनांक 8 से 14 सितंबर के दौरान हिन्दी सप्ताह का आयोजन किया गया। संस्थान के निदेशक श्री एन. के. वासु की अध्यक्षता में आयोजित हिन्दी दिवस में संस्थान के सभी कर्मचारी उपस्थित थे। सभा में हिन्दी सप्ताह पर आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में श्रेष्ठ प्रदर्शन करनेवाले कर्मचारियों को प्रशस्ति पत्र और पुरस्कार से सम्मानित किया गया तथा अन्य सभी प्रतिभागियों को प्रशस्ति पत्र और सांत्वना पुरस्कार दिया गया।

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा दिनांक 14 से 26 सितम्बर 2009 की अवधि में ''हिन्दी पखवाड़ा'' मनाया गया उसी के अन्तर्गत दिनांक 14 सितम्बर 2009 को ''हिन्दी दिवस'' मनाया गया। इस अवसर पर संस्थान के डॉ. विजेन्द्र पंवार ने माननीय गृह मंत्री, श्री पी. चिदम्बरम द्वारा जारी संदेश पढ़कर सुनाया। पखवाड़े के दौरान भारत सरकार के हिन्दी के प्रति नीति व समय–समय पर जारी किये जा रहे दिशा–निर्देशों के बारे में जानकारी दी। संस्थान द्वारा प्रशिक्षण इत्यादि का पाठ्यक्रम हिन्दी में उपलब्ध करवाया जा रहा है एवं किसानों के लिए वनों पर आधारित जानकारी लिखित एवं मौखिक रूप से हिन्दी में ही प्रदान की जा रही है।

वन विज्ञान केन्द्र

वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून द्वारा वन विज्ञान केन्द्र के कार्यक्रम के तहत ''पौधशाला एवं रोपण प्रौद्योगिकी'' पर दिनांक 8 से 10 दिसम्बर 2009 तक पिंजौर मे हरियाणा राज्य के वनविदों के लिए, दिनांक 9 से 11 दिसम्बर 2009 तक चण्डीगढ़ में संघराज्य क्षेत्र चण्डीगढ़ के वनविदों के लिए तथा दिनांक 16 से 18 दिसम्बर 2009 तक हल्द्वानी में उत्तराखण्ड राज्य के वनविदों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गए।

काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, बंगलौर द्वारा दिनांक 3 जुलाई 2009 को वन विज्ञान केंद्र काडुगोडी में आधुनिक पौधशाला व्यवसाय तथा काष्ठ परिरक्षण विषय पर एक प्रदर्शन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रदर्शन कार्यक्रम में 70 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर द्वारा ''तकनीक, नर्सरी प्रबंधन, रोपणी विधियॉ, रख–रखाव एवं प्लांटिंग स्टाक इम्प्रूवमेंट'' विषय पर वन विज्ञान केन्द्र, जबलपुर, मध्यप्रदेश द्वारा दिनांक 11 और 12 अगस्त 2009 को दो दिवसीय प्रशिक्षण राज्य वन विभाग कर्मियों, किसानों एवं अशासकीय संगठनों के कर्मियों को डिंडोरा (म.प्र.) में तथा वनविज्ञान केन्द्र, उड़ीसा द्वारा कोरापुट में दो दिवसीय दो प्रशिक्षण कार्यक्रम क्रमशः दिनांक 26 और 27 अगस्त 2009 एवं 16 और 17 सितम्बर 2009 को राज्य वन कर्मियों हेतु आयोजित किया गया।

आदर्श ग्राम

काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, बंगलौर द्वारा दिनांक 1 जुलाई 2009 को वनरोपण तकनीक पर बैरनहल्ली ग्राम (आदर्श ग्राम) में एक प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस दौरान किसानों को सिल्वर ओक के 2000 पौधे वितरित किये गये। ये पौधे संस्थान के पदाधिकारी की देख–रेख में रोपित किये गये।

जागरूकता कार्यक्रम

वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून द्वारा पंजाब राज्य के मोहाली जिले में स्थिति हडेसरा गांव में 22 दिसम्बर 2009 को किसानों के लिए वर्मा ड्रेक (*मीलिया कम्पोजिटा*) के विशेष संदर्भ में कृषि वानिकी पर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में हंडेसरा तथा आस–पास के 35 किसानों ने भाग लिया। संस्थान द्वारा दिनांक 1 दिसम्बर

भा.वा.अ.शि.प.

2009 को पौड़ी जनपद, उत्तराखण्ड के गांवों, लसेरा, राई, सिल्सू तथा नोंण गांव के 30 किसानों के लिए डांडा श्री नागराजा मंदिर परिसर में पारिस्थितिकीय पुनर्स्थापन के तहत लगाये पौधों तथा कृषि वानिकी पर जानकारी से समृद्ध जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन भी किया गया।

प्रकाशन

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् की हिन्दी पत्रिका तरुचिन्तन का नवम्बर 2009 में प्रकाशन हुआ।पत्रिका में राजभाषा के कार्यान्वयन के प्रतिवेदन एवं जानकारियों के साथ–साथ वानिकी तथा अन्य वैज्ञानिक विषयों पर रोचक लेखों, कविताओं एवं कहानियों का समावेश किया गया। पत्रिका का उद्देश्य राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार एवं परिषद् कर्मियों की रचनात्मक प्रवृति को बढ़ावा देना है।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् द्वारा सतर्कता जागरूकता सप्ताह, दिनांक 3 से 7 नवम्बर 2009 को परिषद मुख्यालय देहरादून, वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून; वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान, कोयम्बटूर; काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, बंगलौर; वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट; हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला एवं वन उत्पादकता संस्थान, रांची में मनाया गया। शपथ लेने के अतिरिक्त विविध गतिविधियाँ आयोजित की गई।

अतिथि

- वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून के प्रांगण में दिनांक 10 अगस्त 2009 को माननीय डॉ. मोंटेक सिंह अहलुवालिया, योजना आयोग के उपाध्यक्ष द्वारा कदम्ब का पौधा तथा माननीय श्री जयराम रमेश, केन्द्रीय पर्यावरण एवं वन मंत्री द्वारा रूद्राक्ष का पौधा रोपित किया गया। इस अवसर पर श्री जगदीश किशवान, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प., डॉ.एस.एस.नेगी, निदेशक, वन अनुसंधान संस्थान तथा अन्य अधिकार गण उपस्थित थे।

माननीय डॉ. मोंटेक सिंह अहलुवालिया द्वारा कदम्ब का पौधा रोपित करने के अवसर पर माननीय श्री जयराम रमेश एवं परिषद के अन्य उच्चाधिकारी

- श्री जयराम रमेश, माननीय पर्यावरण एवं वन मंत्री, भारत सरकार ने दिनांक 22 नवम्बर 2009 को वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान, कोयम्बटूर का दौरा किया। मंत्री महोदय ने संस्थान में वायुमण्डलीय कार्बन डाईऑक्साइड (CO_2) स्तर के अध्ययन हेतु स्थापित ऑटोमेटेड ओपन टॉप चैम्बर (AOTC) का भी निरीक्षण किया। उन्होंने संस्थान के उत्कृष्ट अनुसंधान की सराहना की।
- डॉ. पी.जे.दलीप कुमार, भा.व.से., महानिदेशक (वन) एवं विशेष सचिव, भारत सरकार पर्यावरण एवं वन मंत्रालय ने 18 जुलाई 2009 को वन अनुसंधान संस्थान का भ्रमण किया।
- श्रीमती मेनका गाँधी, संसद सदस्य ने 3 नवम्बर 2009 को वन अनुसंधान संस्थान का भ्रमण किया।
- श्रीमती मार्गरेट अल्वा, महामहिम राज्यपाल उत्तराखण्ड ने 7 दिसम्बर 2009 को वन अनुसंधान संस्थान का भ्रमण किया।

डॉ. जी.एस. रावत, परिषद् के नये महानिदेशक

डॉ. जी.एस. रावत, भा.व.से. ने दिनांक 19 अगस्त 2009 (अपराह्न) को भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् के महानिदेशक का पद भार ग्रहण किया। निवृतमान महानिदेशक, श्री जगदीश किशवान, भा.व.से. को दिनांक 24 अगस्त 2009 को सायंकाल वन अनुसंधान संस्थान के दीक्षान्तगृह में भावभीनी विदाई दी गई। इस अवसर पर परिषद् एवं वन अनुसंधान संस्थान के अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे।

डॉ. जी.एस. रावत,
भा.वा.अ.शि.प. के नये महानिदेशक

संरक्षक :
डॉ. गोविन्द सिंह रावत, महानिदेशक

सम्पादक मण्डल :
डॉ. रवीन्द्र कुमार, उप महानिदेशक (विस्तार)
अध्यक्ष
श्री आर.पी. सिंह, सहायक महानिदेशक (मीडिया एवं प्रकाशन)
मानद सम्पादक
श्री रमाकान्त मिश्र, अनुसंधान अधिकारी (मीडिया एवं प्रकाशन)
सदस्य

प्रेषक :
श्री आर.पी. सिंह
सहायक महानिदेशक (मीडिया एवं प्रकाशन)
विस्तार निदेशालय भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्,
डाकघर–न्यू फॉरेस्ट, देहरादून–248 006
ई–मेल : adg_mp@icfre.org
दूरभाष : 0135–2755221, फैक्स : 0135–2750693

- 'वानिकी समाचार' में प्रकाशित सामग्री सम्पादक मण्डल के विचारों को अनिवार्यतः प्रतिबिंबित नहीं करती है।
- प्रकाशन हेतु सामग्री मानद संपादक को प्रेषित की जा सकती है।
- डिजिटल संस्करण www.icfre.gov.in पर उपलब्ध है।

सेवा में,

____

____

____

मुद्रक : अवि प्रिन्टर्स, 21, ई.सी. रोड़, देहरादून, फोनः 0135–2659970